17.12.2020

परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के 38वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर वक्तव्य

- परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के 38वें मुनि दीक्षा दिवस और 25 समवसरण विधान में वर्चुअल माध्यम से आप सबसे जुड़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।
- यह हम सबका परम सौभाग्य है कि विराग सागर जी का मार्गदर्शन हमें सहज सुलभ है। आपसे पूरी मानवता को प्रेरणा मिलती है। आपको श्रद्धा पूर्वक नमस्कार करता हूँ।
- आज मेरे मन में वर्ष 2018 की वह स्मृतियां जीवंत हो उठीं हैं, जब कोटा में आप ससंघ विराजमान थे और आपकी दिव्य उपस्थिति में यही 25 समवसरण विधान कोटा में आयोजित किया गया था।
- उस समय आपके मंगल प्रवेश का उत्सव अद्भुत रहा था। आपके मांगलिक प्रवचनों में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहकर लाभान्वित होते थे।
- पिछले 25 वर्षों से अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ, बेटी पढाओ एवं स्वच्छता के प्रति केंद्रित आपके प्रवचन अनेक लोगों को इन गुणों को आत्मसात कर कल्याण के मार्ग पर चलने को प्रेरित कर चुके हैं।
- **इस अभियान के रजत वर्ष में निकाली गई विशाल पदयात्रा जब कोटा होकर गुजरी थी तो मुझे भी इस यात्रा में अहिंसा ध्वज हाथ में लेकर आपके सान्निध्य में चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस बात का मुझे आज भी गर्व है।**
- आज एक ओर जहां आपके शिष्य जैनत्व की वृद्धि को समर्पित हैं, वहीं आप स्वयं देश के नगर नगर एवं गांव गांव में लगभग 1 लाख किलोमीटर का विहार कर असंख्य लोगों में मानव मूल्यों का विकास कर चुके हैं। मैं मानवता की सेवा के इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।
- हमारा देश अध्यात्म के साथ साथ हमेशा से ही शांति और मानवता के प्रति प्रेम का केन्द्र रहा है। हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में भी आध्यात्मिकता और विश्व शांति की महत्ता का उल्लेख किया गया है। हमारे जनमानस और संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम् अर्थात् पूरा विश्व हमारा परिवार है' की सर्वव्यापी भावना निहित रही है। इसी सार्वभौमिक कल्याण की भावना से जैन धर्म भी ओतप्रोत है।
- जैन धर्म विश्व के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है। सत्य, अहिंसा, त्याग एवं सांसारिकता से मुक्ति के शाश्वत मूल्यों के संवर्धन हेतु जैन धर्म का उदय हुआ था। जैन मत में 24 तीर्थंकरों की एक सुदीर्घ परंपरा रही है।
- प्रथम तीर्थंकर महाप्रभु ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर, सभी तीर्थंकरों ने बन्धन को त्यागकर मोक्ष को अंगीकार किया है। उनके विचारों तथा उनके जीवन से जैन दर्शन का विकास हुआ है।

- **'अहिंसा परमो धर्म' भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। यह तत्व हमारे देश की मिट्टी में ही रचा-बसा है। भगवान महावीर ने कहा था कि सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान ही अहिंसा है और अहिंसा शक्तिशाली लोगों की पहचान है। "जियो और जीने दो", भगवान महावीर का अहिंसा के प्रति यह आग्रह ही जैन धर्म के मूल में है।**

- आज के विश्व की अधिकतर समस्याओं के मूल में हिंसा अथवा हिंसक सोच है। हिंसा से शांति संभव नहीं। यदि हम मानवता के विरुद्ध, प्रकृति के विरुद्ध तथा पृथ्वी रुपी गृह के विरुद्ध हिंसक आचरण का त्याग कर दें, तो हमारा जीवन सुख, शांति तथा समृद्धि से परिपूर्ण हो सकता है। जैन मुनियों ने इस तत्व ज्ञान की प्राप्ति कर ली है और उन्होंने पूरे विश्व में इसी सन्देश का प्रसार करने का कार्य किया है।

- हम सबको, विशेष रूप से हमारे युवा वर्ग को यह समझना चाहिए कि आर्थिक विकास का मूल आधार भी शांति ही है। यदि हमें आर्थिक और राजनीतिक महाशक्ति बनना है, तो निश्चय ही इस विशाल एवं अपार युवाशक्ति का सकारात्मक उपयोग किया जाना चाहिए।

- हम यहां पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भी याद कर सकते हैं। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता की बुनियाद ही सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर रखी थी। इसी सिद्धांत पर उन्होंने संपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम को संचालित किया था। यह अहिंसा का एक अभिनव प्रयोग था। हम कह सकते है कि गांधी जी के जीवन एवं दर्शन पर जैन आचार्यों के अहिंसा के विचारों का बडा प्रभाव था।

- जैन धर्म में मानवता की सेवा पर भी बल दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप हमें अपने आस पास इतने सारे अस्पताल, स्कूल और लोक हित के अन्य संस्थान दिखाई देते हैं जिनकी स्थापना और प्रबंधन जैन धर्म के लोगों द्वारा किया जा रहा है। उनके जनहित के कार्यों से सभी की भलाई के लिए जन सेवा किए जाने और लोकोपकारी कार्य किए जाने की भावना को बढ़ावा मिलता है।

- आज पूरा विश्व कोरोना महामारी के संकट से गुज़र रहा है। इस बीमारी ने पूरी मानवता को प्रभावित किया है। परन्तु इस संकट के समय ऐसे कई व्यक्ति हैं, कई संगठन हैं जिन्होंने परोपकार, त्याग एवं दान की भावना से कार्य किया और समाज में व्याप्त दुःख तथा विपत्ति को कम करने के लिए कार्य किया। जैन समाज भी इस मुश्किल वक़्त में पूरी तत्परता और ताकत से सहायता कार्य में लगा हुआ है। मैं इस पुनीत कार्य में लगे सभी व्यक्तियों का अभिनन्दन करता हूँ।

- मुझे बताया गया है कि इस भव्य आयोजन के दौरान विश्व को कोरोना महामारी से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थनाएं की जाएंगी। 9 दिनों तक कीर्ति जैन स्तंभ मंदिर में भगवान के जयकारे और मंत्र गूंजेंगे। विश्व शांति के लिए महायज्ञ होगा। इस अवसर पर मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ और आपके भावी प्रयासों में सफलता की कामना करता हूँ।

- मुझे इस समारोह में शामिल होने का अवसर देने के लिए परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की वंदना करते हुए मैं एक बार फिर से आप सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। भगवान महावीर की कृपा हम सब पर सदा बनी रहे।

- सादर। जय जिनेंद्र!!!